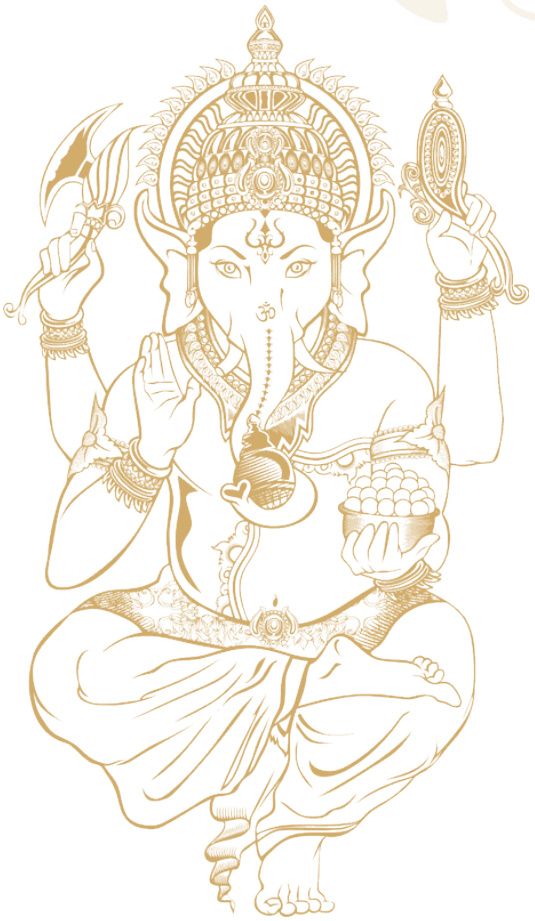

Mr.

11 Apr 2026

08:00 PM

Delhi

Model: Baby-Horoscope **Order No: 121899901**

तिथि 11/04/2026 **समय** 20:00:00 **वार** शनिवार **स्थान** Delhi **चित्रपक्षीय अयनांश** : 24:13:33
अक्षांश 28:39:00 उत्तर **रेखांश** 77:13:00 पूर्व **मध्य रेखांश** 82:30:00 पूर्व **स्थानिक संस्कार** -00:21:08 घंटे

पंचांग

साम्पातिक काल	08:58:09 घं
वेलान्तर	00:01:05 घं
सूर्योदय	06:00:27 घं
सूर्यास्त	18:44:29 घं
चैत्रादि संवत	2083
शक संवत	1948
मास	वैशाख
पक्ष	कृष्ण
तिथि	9
नक्षत्र	श्रवण
योग	साध्य
करण	गर

अवकहड़ा चक्र

गण	देव
योनि	वानर
नाड़ी	अन्त्य
वर्ण	वैश्य
वश्य	जलचर
वर्ग	मार्जार
युंजा	अन्त्य
हंसक	भूमि
जन्म नामाक्षर	खी-खिलावन
पाया(रा.-न.)	लौह-ताम्र
होरा	चन्द्र
चौघड़ियां	लाभ

विंशोत्तरी

चन्द्र 7वर्ष 6मा 17दि

चन्द्र

11/04/2026
28/10/2033

	00/00/0000
	11/04/2026
राहु	28/09/2026
गुरु	28/01/2028
शनि	28/08/2029
बुध	27/01/2031
केतु	28/08/2031
शुक्र	28/04/2033
सूर्य	28/10/2033

योगिनी

मंगला 0वर्ष 9मा 1दि

मंगला

11/04/2026
12/01/2027

	00/00/0000
	00/00/0000
	11/04/2026
भ्रामरी	23/04/2026
भद्रिका	13/06/2026
उल्का	13/08/2026
सिद्धा	23/10/2026
संकटा	12/01/2027

ग्रह	व	अ	अंश	राशि	नक्षत्र	पद	स्वामी	अं-	स्थिति	षट्बल	चर	स्थिर	ग्रह तारा
लग्न			14:36:33	तुला	स्वाति	3	राहु	केतु	---	0:00			
सूर्य			27:29:07	मीन	रेवती	4	बुध	गुरु	मित्र राशि	1.35	आत्मा	पितृ	साधक
चन्द्र			13:16:16	मक	श्रवण	1	चन्द्र	राहु	सम राशि	1.73	मातृ	मातृ	जन्म
मंगल		अ	07:09:56	मीन	उ.भाद्रपद	2	शनि	बुध	मित्र राशि	1.12	ज्ञाति	भ्रातृ	प्रत्यारि
बुध			00:59:57	मीन	पू.भाद्रपद	4	गुरु	मंगल	नीच राशि	0.87	कलत्र	ज्ञाति	क्षेम
गुरु			22:24:12	मिथु	पुनर्वसु	1	गुरु	शनि	शत्रु राशि	1.09	अमात्य	धन	क्षेम
शुक्र			20:26:14	मेष	भरणी	3	शुक्र	गुरु	सम राशि	1.33	भ्रातृ	कलत्र	मित्र
शनि		अ	12:37:53	मीन	उ.भाद्रपद	3	शनि	मंगल	सम राशि	1.15	पुत्र	आयु	प्रत्यारि
राहु			13:51:11	कुंभ	शतभिषा	3	राहु	बुध	मित्र राशि		---	ज्ञान	विपत
केतु			13:51:11	सिंह	पू.फ़ाल्गुनी	1	शुक्र	शुक्र	शत्रु राशि		---	मोक्ष	मित्र

लग्न-चलित

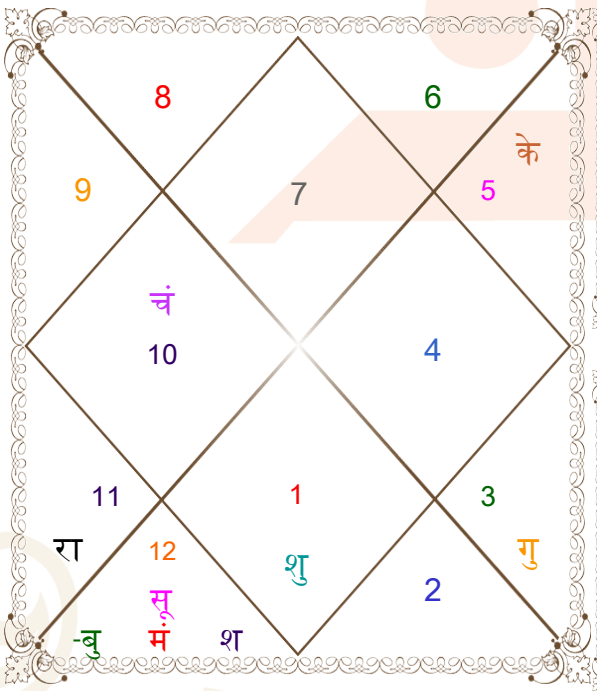

चन्द्र कुंडली

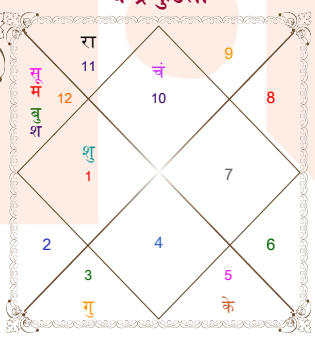

नवमांश कुंडली

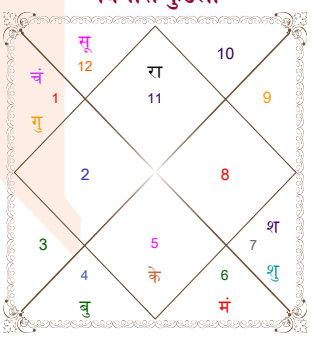

सर्वाष्टकवर्ग

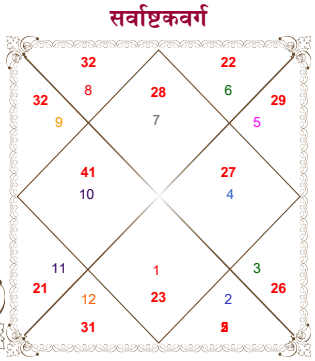

दशमांश कुंडली

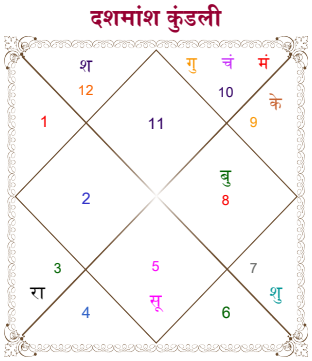

नक्षत्रफल

आपका जन्म श्रवण नक्षत्र के प्रथम चरण में हुआ है। अतः आपकी जन्म राशि मकर तथा राशि स्वामी शनि होगा। नक्षत्रानुसार आपका वर्ण वैश्य, गण देव, योनि वानर, नाड़ी अन्त्य तथा वर्ग मार्जार होगा। नक्षत्र के प्रथम चरणानुसार आपके जन्म नाम का प्रारम्भ 'क्षि' या 'क्षी' अक्षर से होगा।

आप हमेशा शास्त्रों के अध्ययन में तत्पर रहेंगे तथा परिश्रम पूर्वक इनका ज्ञान प्राप्त करेंगे। आपके पुत्रों की संख्या कन्याओं की अपेक्षा अधिक रहेगी। साथ ही आपकी मित्रता का क्षेत्र भी विस्तृत रहेगा एवं मित्रों से हमेशा सहयोग अर्जित करते रहेंगे। सज्जन पुरुषों एवं विद्वानों के प्रति आपके मन में पूर्ण श्रद्धा रहेगी तथा इनको आप हमेशा हार्दिक मान सम्मान प्रदान करेंगे। आपके शत्रु हमेशा आपसे भयभीत रहेंगे तथा इन पर विजय प्राप्त करने में आप हमेशा सफल रहेंगे। इसके अतिरिक्त धर्मशास्त्र तथा पुराणों को श्रवण करने में भी आपकी रुचि रहेगी तथा इसके लिए आप नित्य प्रयत्नशील रहेंगे।

जातकाभरणम्

अर्थात् श्रवण नक्षत्र में उत्पन्न जातक शास्त्रों में संलग्न, अधिक पुत्र और मित्रों वाला, सत्पात्रों का भक्त, शत्रुनाश करने वाला एवं पुराण श्रवण करने में तेज होता है।

आपकी देवता तथा ब्राह्मणों के प्रति पूर्ण हार्दिक श्रद्धा रहेगी तथा समय समय पर आप इनकी पूजा तथा सेवा करते रहेंगे। आप एक धनाढ्य पुरुष होंगे तथा विपुल धन से सर्वथा युक्त रहकर जीवन में सुखपूर्वक उसका उपभोग करेंगे। साथ ही स्वपरिश्रम तथा योग्यता के बल पर किसी उच्चाधिकार प्राप्त पद को भी सुशोभित कर सकेंगे। इसके अतिरिक्त आप एक धर्मनिष्ठ व्यक्ति होंगे तथा समस्त धार्मिक क्रियाओं का अनुपालन करने के लिए नित्य रुचिशील एवं प्रयत्नशील रहेंगे।

जातक पारिजातः

अर्थात् श्रवण नक्षत्र में उत्पन्न जातक देवता तथा ब्राह्मणों की भक्ति में तत्पर रहने वाला, राजा, धनी तथा धर्मनिष्ठ होता है।

समाज में आप एक श्रीमान् व्यक्ति होंगे तथा सभी लोग आपको उचित मान सम्मान प्रदान करेंगे। विभिन्न शास्त्रों का आप को विस्तृत ज्ञान रहेगा तथा एक विद्वान के रूप में आपकी ख्याति दूर-दूर तक व्याप्त रहेगी। आप एक उदार प्रवृत्ति के व्यक्ति होंगे तथा समाज के सभी वर्गों के प्रति इस प्रवृत्ति का यत्नपूर्वक अनुपालन करेंगे। आपकी पत्नी भी एक गुणवती एवं सुशील महिला होगी। अतः समस्त भौतिक तथा सांसारिक सुखों का आप आनन्दपूर्वक उपभोग करेंगे।

बृहज्जातकम्

अर्थात् श्रवण नक्षत्र में उत्पन्न जातक लक्ष्मीवान, पण्डित, सौन्दर्ययुक्त, गुणीभार्या का पति, धनी तथा विख्यात होता है।

आप में स्वभाव से ही कृतज्ञता की भावना विद्यमान रहेगी एवं अन्य जनों के द्वारा उपकृत होने पर आप उनका उपकार स्वीकार करेंगे तथा उनका हार्दिक आभार भी प्रकट करेंगे। आपका शारीरिक सौन्दर्य दर्शनीय एवं आकर्षक रहेगा तथा अन्य लोग भी इससे प्रभावित रहेंगे। आपकी संतति संख्या अधिक होगी तथा सर्वगुणों से सम्पन्न रहकर आप अपना जीवन व्यतीत करेंगे।

मानसागरी

अर्थात् श्रवण नक्षत्र में जातक कृतज्ञ, सुन्दर, दानी, सर्वगुणसम्पन्न एवं अधिक सम्पत्ति वाला होता है।

आपका जन्म लौहपाद में हुआ है। यद्यपि लौह पाद में उत्पन्न जातक प्रायः धन के अभाव से दुःखी सुखसंसाधनों से हीन तथा अन्य प्रकार से जीवन में कष्ट प्राप्त करता है। परन्तु आपकी कुण्डली में चन्द्रमा शुभराशि में स्थित है। अतः आप अपने जीवन काल में जल से उत्पन्न होने वाले पदार्थों से नित्य लाभार्जन करते रहेंगे। आप एक धनवान पुरुष होंगे तथा अन्य चल अचल सम्पत्तियों के भी स्वामी बनेंगे। आप हमेशा नवीन वस्त्रों से युक्त रहेंगे एवं जीवन में वाहन आदि के सुख को प्राप्त करेंगे। साथ ही सुयोग्य संतति से भी आप युक्त रहेंगे। देवता एवं ब्राह्मणों के प्रति आपके मन में श्रद्धा का भाव रहेगा तथा बन्धु एवं मित्रों से आपके संबंध अत्यन्त ही मधुर रहेंगे एवं उनसे आपको यथोचित सहयोग प्राप्त होता रहेगा। जीवन में आवश्यक भौतिक सुखसंसाधनों से आप प्रायः सुसम्पन्न रहेंगे। साथ ही दानशीलता का भाव भी आपके मन में विद्यमान रहेगा। जल क्रीड़ा के आप शौकीन होंगे तथा इससे हार्दिक प्रसन्नता प्राप्त करेंगे।

मकर राशि में पैदा होने के कारण आपका कद ऊंचा होगा तथा मस्तक भी विस्तृताकार का होगा। आप में शारीरिक बल मध्यम रूप से रहेगा तथा आंखें अत्यन्त ही सुन्दर होंगी तथा शारीरिक सौन्दर्य भी दर्शनीय रहेगा। संगीत में आप विशेष रुचि रखेंगे तथा परिश्रमपूर्वक इसका विस्तृत ज्ञान प्राप्त करेंगे। शीत से आप अत्यधिक व्याकुलता का अहसास करेंगे एवं इसको सहन करने में असमर्थ रहेंगे। सत्य के प्रति आपके मन में गहन श्रद्धा रहेगी एवं इसके पालन के लिए आजीवन यत्नशील तथा तत्पर रहेंगे। समाज में आप एक आदरणीय व्यक्ति होंगे तथा सभी लोग आपको यथोचित मान सम्मान प्रदान करेंगे तथा दूर-दूर तक आपकी ख्याति भी व्याप्त रहेगी। कभी-कभी आप अल्प मात्रा में क्रोध का भी अन्य जनों के समक्ष प्रदर्शन करेंगे। अन्य लोगों के प्रति आपके मन में स्नेह का भाव रहेगा तथा अनावश्यक घृणा एवं द्वेष भाव से आप मुक्त रहेंगे। आपकी मित्रता अपनी आयु से अधिक आयु के लोगों के साथ में रहेगी। आप लेखन कार्य में भी रुचिशील रहेंगे तथा कविता सृजन में सफलता प्राप्त कर सकेंगे। उत्साह के भाव से आप युक्त रहेंगे तथा भाग्यबल से आपके अधिकांश शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य अल्प परिश्रम से ही सम्पन्न हो जाएंगे।

सारावली

आप अपने परिवार के लालन-पालन में अधिकांश रूप से व्यस्त रहेंगे तथा दिखावे के लिए धर्म के प्रति पूर्ण निष्ठा का प्रदर्शन करके उसका आचरण भी करेंगे। आपका कटिभाग भी पतला रहेगा। आपकी बुद्धि सरल होगी तथा अन्य लोगों की बातों को शीघ्र ही मान जाएंगे एवं उनके कहे अनुसार ही किसी कार्य को करने के लिए भी तत्पर रहेंगे। आप में आलस्य का भाव भी रहेगा। अतः

आपके कई कार्य धीरे-धीरे सम्पन्न होंगे। भ्रमण तथा यात्रा आदि करने के आप विशेष शौकीन रहेंगे तथा आपका अधिकांश समय इस पर ही व्यतीत होगा। शारीरिक बल से आप सुसम्पन्न ही रहेंगे। आप अगम्य स्थानों पर जाने तथा कठिन कार्यों को करने के लिए सर्वथा तत्पर रहेंगे। अतः सभी लोग आपके साहस से प्रभावित रहेंगे। आप कभी-कभी हृदय से कठोरता का प्रदर्शन भी अन्य जनों के समक्ष करेंगे। वात से उत्पन्न रोगों से प्रायः आप व्याकुल रहेंगे तथा इनसे आपको कई बार कष्टानुभूति होती रहेगी। इसके साथ ही सर्वप्रकार के सत्वगुणों से आप सुसम्पन्न रहेंगे तथा जीवन में इसका अनुपालन करने के लिए नित्य प्रयत्नशील रहेंगे।

बृहज्जातकम्

आप अपने कुल तथा परिवार की रीतियों तथा मर्यादा की वृद्धि करने में हमेशा प्रयत्नशील रहेंगे तथापि परिवार में आप सामान्य मान सम्मान ही प्राप्त करेंगे। स्त्री के आप नित्य वश में रहेंगे तथा उसी के कथानुसार अपने अधिकांश सांसारिक कार्यों को सम्पन्न करेंगे। आपको नाना प्रकार के शास्त्रों का भी अच्छा ज्ञान रहेगा। अतः एक विद्वान के रूप में आप समाज में प्रसिद्धि प्राप्त करेंगे। महिला वर्ग में आप प्रिय एवं आदरणीय रहेंगे तथा वे सभी आपकी हार्दिक प्रशंसा करेंगी। आप पुत्र संतति से सर्वदा युक्त रहेंगे एवं जीवन में इनसे पूर्ण सुख प्राप्त कर सकेंगे। भाइयों से आपका मधुर व्यवहार एवं स्नेह रहेगा अतः वे आपको अत्यन्त सम्मान प्रदान करेंगे। आप धन सम्पत्ति से सर्वथा सुसम्पन्न रहेंगे। आपके हृदय में त्याग की भावना भी नैसर्गिक रूप से विद्यमान रहेगी तथा अवसरानुकूल आप इसका अनुपालन भी करेंगे। आपके सेवक भी सुन्दर एवं गुणवान होंगे तथा आदर पूर्वक आपके लिए सेवा कार्य करते रहेंगे। आप में दया का भाव भी रहेगा तथा दीन-दुःखियों की आप यथाशक्ति सहायता करते रहेंगे। आपका परिवार विस्तृत रहेगा एवं सुख के प्रति आप नित्य चिन्तनशील रहेंगे एवं उसकी प्राप्ति के लिए उचित उपाय भी करते रहेंगे।

मानसागरी

आप अपने जीवन काल में किसी अन्य व्यक्ति, मित्र या सम्बन्धी के धन सम्पत्ति को प्राप्त करेंगे तथा उसका प्रसन्नतापूर्वक उपभोग करेंगे। आप अन्य जनों के विषय में नित्य चिन्तित रहेंगे तथा उनकी भलाई के लिए यत्नपूर्वक कुछ न कुछ अवश्य करेंगे। सलाह देने या मन्त्रणा आदि के कार्य में भी आप दक्ष रहेंगे। अपने भाई-बन्धुओं का आप पूर्ण रूप से पालन करेंगे। इसके अतिरिक्त बहादुरी के गुणों से भी आप सुसम्पन्न रहेंगे।

जातक दीपिका

संगीत शास्त्र के आप प्रमुख विद्वान होंगे तथा इसके क्षेत्र में ख्याति प्राप्त व्यक्ति होंगे। आपकी शारीरिक कान्ति तथा लावण्यता भी दर्शनीय रहेगी जिससे आपके सौन्दर्य में नित्य वृद्धि होगी। आप में काम-भावना की प्रबलता रहेगी तथा कभी-कभी इससे आप व्याकुलता की भी अनुभूति करेंगे।

जातकाभरणम्

देव गण में उत्पन्न होने के कारण आपकी वाणी अत्यन्त ही मधुर एवं उत्तम होगी तथा आपकी बुद्धि सरलता से युक्त रहेगी। आप अपने विचारों का आदान-प्रदान अत्यन्त सुगमता से सम्पन्न

करेंगे तथा सुगमता से अन्य के विचारों को भी ग्रहण करेंगे। आप अल्प मात्रा में शुद्ध एवं सात्विक भोजन करना भी पसन्द करेंगे। दूसरे के गुणों के विषय में आपको पूर्ण ज्ञान रहेगा एवं स्वयं भी श्रेष्ठ विद्वानों द्वारा वर्णित सद्गुणों से सम्पन्न रहेंगे। साथ ही विभिन्न प्रकार के धनैश्वर्य से भी आप युक्त रहेंगे एवं अपना जीवन सुखपूर्वक व्यतीत करेंगे।

आपका शारीरिक सौन्दर्य आकर्षक रहेगा एवं दानशीलता की भावना भी आप में विद्यमान रहेगी तथा समयानुसार यथाशक्ति इसका अन्य जनों के समक्ष प्रदर्शन भी करते रहेंगे। आप एक बुद्धिमान पुरुष होंगे तथा सादगी पूर्ण जीवन व्यतीत करने के लिए उत्सुक रहेंगे। अनावश्यक भौतिकता या दिखावे से आप दूर ही रहना पसन्द करेंगे। साथ ही समाज में एक श्रेष्ठ विद्वान के रूप में आप आदरणीय रहेंगे।

जातकाभरणम्

अर्थात् देवगण का जातक अच्छी वाणी वाला, सरल बुद्धि से युक्त, अल्प मात्रा में भोजन करने वाला, अन्य जनों के गुणों का ज्ञाता, महान विद्वानों द्वारा वर्णित गुणों से युक्त तथा वैभवशाली होता है।

वानर योनि में उत्पन्न होने के कारण आप प्रारम्भ से ही चंचल स्वभाव के व्यक्ति रहेंगे एवं अपने अधिकांश कार्यों को चपलतापूर्वक ही सम्पन्न करेंगे। मीठे पदार्थों का भक्षण करना आपको अत्यन्त ही रुचिकर लगेगा। धन के प्रति आपके मन में विशेष लोलुपता रहेगी तथा इसे प्राप्त करने के लिए अत्यन्त ही आतुरता का प्रदर्शन करेंगे। यदा-कदा आप कलह आदि के लिए प्रेरित होंगे तथा समय-समय पर अन्य जनों से परस्पर वाद-विवाद होते रहेंगे। आप में काम-भावना की भी प्रबलता रहेगी। आपकी सभी सन्ततियां बुद्धिमान एवं गुणवान रहेंगी। इसके साथ ही आप एक साहसी एवं वीर पुरुष भी होंगे तथा समय-समय पर अपने साहस एवं वीरता का प्रदर्शन करते रहेंगे। घात या अशुभ समय

मानसागरी

अर्थात् वानर योनि में उत्पन्न पुरुष चंचल, मीठी चीजों का खाने वाला, धन का लोभी, झगड़ों का प्रेमी, काम चेष्टा वाला, अच्छी संतान से युक्त एवं शूरवीर होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा की स्थिति चतुर्थ भाव में होने से माता का शारीरिक स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आपके प्रति उनका प्रगाढ़ स्नेह रहेगा एवं जीवन में सर्वप्रकार की सुख-सुविधाएं तथा अन्य सुखों को वे आपको प्रदान करेंगी। आपके मध्य मतभेद अल्प ही रहेंगे, अतः परस्पर संबंध मधुर रहेंगे। साथ ही वाहनादि की प्राप्ति में भी वे आपको पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगी तथा कभी भी कोई कठिनाई का सामना नहीं करने देंगी।

आप भी उनका हमेशा हार्दिक सम्मान करेंगे तथा उनकी आज्ञा एवं निर्देशों को मानने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे। साथ ही अपने जीवनकाल में उनकी श्रद्धापूर्वक सेवा करेंगे तथा आवश्यक सुख-सुविधाओं को भी प्रदान करेंगे। इस प्रकार आपके परस्पर संबंध मधुर एवं सुदृढ़ रहेंगे तथा जीवन

को प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत करेंगे।

आपके जन्म समय में सूर्य छठे भाव में स्थित है अतः पिता के आप प्रिय रहेंगे। उनका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा तथा आयु भी अच्छी होगी। धनैश्वर्य से वे सर्वदा युक्त रहेंगे एवं जीवन में समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपको पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे। इसके साथ ही वे आपको शत्रुओं तथा अन्य सांसारिक कष्टों से नित्य सुरक्षित रखने के लिए भी तत्पर रहेंगे।

आप भी उनका हमेशा हार्दिक सम्मान करेंगे एवं नित्य उनकी आज्ञा पालन करने में भी तत्पर रहेंगे। आपके आपसी संबंध मधुर होंगे परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे जिससे कुछ समय के लिए संबंधों में तनाव उत्पन्न होगा परन्तु उसके बाद सब कुछ सामान्य एवं पूर्ववत् हो जाएगा। इसके साथ ही आप जीवन में उन्हें हमेशा वांछित आर्थिक तथा अन्य प्रकार की सहायता करते रहेंगे तथा अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार की कष्टानुभूति नहीं होने देंगे।

आपके जन्म समय में मंगल छठे भाव में है, अतः भाई-बहनों का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं समय-समय पर वे शारीरिक रूप से अस्वस्थ रहेंगे। धन-संपत्ति का उनके पास अभाव नहीं रहेगा एवं आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह एवं सम्मान का भाव रहेगा। जीवन में वे समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों तथा क्षेत्रों में आपको अपना वांछित सहयोग प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगे एवं अपनी ओर से आपको किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं होने देंगे। साथ ही, शत्रु वर्ग से भी वे आपकी नित्य रक्षा करने में तत्पर रहेंगे।

आपके मन में भी उनके प्रति पूर्ण स्नेह का भाव रहेगा एवं आप हमेशा उनको अपना सहयोग प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगे। आपके आपसी संबंध मधुर रहेंगे तथा यदा-कदा सामान्य रूप से मतभेद भी उत्पन्न होंगे, जिससे संबंधों में क्षणिक तनाव की स्थिति रहेगी, परंतु कुछ समय के उपरांत स्वतः ही सब कुछ ठीक हो जाएगा। इसके साथ ही आप सुख-दुःख में उन्हें वांछित आर्थिक तथा अन्य प्रकार से भी सहयोग देंगे एवं यत्नपूर्वक उनकी भलाई करने में तत्पर रहेंगे।

आपके लिए वैशाख मास, चतुर्थी, नवमी, चतुर्दशी तिथियां, वैधृति योग, शकुनि करण, मंगलवार चतुर्थ प्रहर तथा सिंह राशिस्थ चन्द्रमा हमेशा अशुभ फलदायक रहेंगे। अतः आप 15 अप्रैल से 14 मई के मध्य 4, 9, 14 तिथियों, रोहिणी नक्षत्र, वैधृति योग तथा शकुनि करण में कोई भी शुभ कार्य, व्यापार प्रारम्भ, नवगृह निर्माण, क्रय-विक्रय आदि अन्य महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न न करें अन्यथा लाभ की अपेक्षा हानि ही होगी। साथ ही मंगलवार, चतुर्थ प्रहर तथा सिंह राशि के चन्द्रमा को भी शुभ कार्यों में वर्जित रखें। इन दिनों तथा समय में शारीरिक स्वास्थ्य एवं सुरक्षा के प्रति भी विशेष सावधानी रखनी चाहिए।

यदि आपके लिए समय अशुभ चल रहा हो, मानसिक तथा शारीरिक व्याकुलता, व्यापार में हानि, नौकरी या पदोन्नति में बाधाएं उत्पन्न हो रही हों, तो ऐसे समय में आपको अपने इष्ट देव श्री नृसिंह भगवान की उपासना करनी चाहिए तथा शनिवार के उपवास भी करने चाहिए। साथ ही सोना, नीलम, लोहा, तिल, तेल, कम्बल तथा चर्मपादुकाएं आदि पदार्थों का किसी योग्य सुपात्र को दान करना चाहिए। इससे आपको मानसिक शान्ति प्राप्त होगी तथा शुभ फलों की प्राप्ति होगी। इसके अतिरिक्त शनि के

तान्त्रिक मन्त्र के कम से कम 19,000 जप किसी योग्य विद्वान से सम्पन्न करवाने चाहिए; इससे आपके लाभमार्ग प्रशस्त होंगे एवं अशुभ फलों का प्रभाव भी समाप्त होगा।

मंत्र- ॐ ऐं ह्रीं श्रीं शनैश्चराय नमः।